THREE FRIENDS IN A SCHOOL

STRUGGLE FOR AN EDUCATION

VISHAL KUMAR VEER

THREE FRIENDS IN A SCHOOL

Struggle For An Education

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN:978-81-19927-75-3

Price: ₹ 222.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

THREE FRIENDS IN A SCHOOL

Struggle For An Education

Vishal Kumar Veer

लेखक के बारे में

मैं विशाल कुमार वीर, बिहार राज्य के मझौलिया प्रखंड के चौलाभार नामक गाँव का रहने वाला हूँ। मेरे पिताजी, श्री शिव शम्भू ठाकुर एक मध्यवर्गीय किसान हैं तो मेरी माताजी श्रीमती ज्ञानती देवी एक गृहणी है। मैं अपने तीन भाइयों में ज्येष्ठ हूँ। मेरे दो छोटे बन्धुजन रोहित कुमार और रवि किशन कुमार है। जो अभी मेरे गाँव में एक निजी विद्यालय में अध्ययनरत है। मेरी प्रारंभिक शिक्षा मोहदिपूर पंचायत जो मेरे गाँव से ठीक एक कि.मी. की दूरी पर स्थित है, वहाँ के एक सरकारी स्कूल, राजकीय मध्य विद्यालय में पूरी हुई। जून 2011 से मेरी शिक्षा मोतिहारी के एक प्राइवेट स्कूल, एम.एस. मेमोरियल पब्लिक स्कूल में चल रही है। यहाँ मैंने षष्ठी वर्ग में नामांकन प्राप्त किया था, तथा तत्काल मैं इसी साल दसवीं बोर्ड की परीक्षा दिया है।

मेरे माता–पिता तथा छोटे भाइयों के द्वारा मुझे मिलने वाला सहयोग अमूल्यवान है, जिसे मैं अपने जीवन भर कभी नहीं भूला सकता।

वर्तमान समय में मैं रघुनाथपूर गाँव जो मोतिहारी शहर के नजदीक है, अपने मामाजी विकास कुमार के पिता श्री हरदेव ठाकुर तथा माता श्रीमती मीना देवी, जो मेरे नाना–नानी है, के साथ रहता हूँ। जिनकी सहायता और सहारे ने ही मुझे इस काबिल बना सका, जिसके लिए मैं उन सभी का तहे दिल से शुक्रियादा करना चाहता हूँ।

इस पुस्तक को एक अलग मोड़ देने में मेरे दो दोस्त मासूम राज मंगलम और प्रशांत कुमार पांडेय ने बहुत सहायता की।

मेरी यह पहली लिखी हुई पुस्तक हैं जो एक काल्पनिक कहानी है और तीन दोस्तों के साथ एक बूढ़े दादा–दादी से जुड़े अपने गरीबी और मीडिल क्लास के फैमली के उन सभी टैलेंटेड लड़कों को दर्शाता है।

पुस्तक के बारे में

यह पुस्तक मानव समाज के उन गरीब परिवारों के बच्चों जो कि प्रतिभावान होने के बावजूद भी वे अपने सपनों को पंख नहीं लगा पाते और उसका जो प्रमुख कारण होता वह उनकी गरीबी होती है जो चाहकर अपने बेटे–बेटी को पैसा न होने के कारण बड़े स्कूल में पढ़ा नहीं पाते।

यहाँ इस पुस्तक में भी तीन दोस्तों में से एक दोस्त पढ़ने–लिखने में बहुत तेज–तराक होता है और अपने हुनर से पूरे स्कूल में ऐसे छा जाता है कि स्कूल के सभी बच्चे आगे चलकर आई.ए.एस. या आई.पी.एस. बनना छोड़ केवल उसके जैसा बनना चाहते हैं। लेकिन वह आगे अपने बोर्ड की परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए स्कूल में पैसा चुका नहीं पाता है और अंततः भगवान को प्यारे हो जाता है। और उसके दो दोस्त भी अपने–अपने फिल्ड में कुछ नाम कमाते हैं।

इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य यह है कि इस आधुनिक युग में छोटे छात्रों से जुड़ी अपने पढ़ाई और एक गलत सोच फैले जात–पात और बहन–बेटियों के शादी के लिए दहेज प्रथा और छात्रों को आत्महत्या करने की कोशिश को एक सही सोच देकर सुधारने की है।

शनिवार का दिन, शाम का वक्त था। सूर्य रक्ताभ दिखाई देते हुए सूर्यास्त की ओर बढ़ रहा था। मैं तत्काल स्टेशन के नजदीक एक प्रमुख किताब की दुकान पर बैठकर हिंदी मैग्जीन पढ़ रहा था, जो खगोल विज्ञान पर आधारित थीं जहाँ हर पाँच मिनट पर एक ट्रेन अपने चोको से ''पो–पो'' आवाज देते हुए आती–जाती थी।

दुकान शहर के एक मिडिल क्लास प्रेमचन्द नामक बूढ़े व्यक्ति की थी, जिन्हें मैं अक्सर दादा जी कह कर बुलाया करता था। मन के बहुत ही भले और सच्चे व्यक्ति थे, लेकिन उनके पास एक भी पुत्र या पुत्री न होने के कारण हमेशा दुखी रहते थे। बस अपने बची–खुची जीवन किसी तरह अपनी धर्म पत्नी जानकी के साथ व्यतीत कर रहे थे। उनकी हर छोटी–बड़ी काम में हाथ बटाने के कारण मुझे वह अपना पुत्र मानते थे। यह सिलसिला, अचानक से घटी एक घटना से हुई थी।

मैं अक्सर कभी–कभार सोचता रहता था कि यह कैसी विडंबना है? जिसके पास पहले से सब–कुछ हो, उसे और थाली भर–भर के मिले, और जिसे कोई देखने वाला भी न हो, उसे गणेश जी देखते भी नहीं! आखिर यह कैसी प्रभु की लीला हैं? फिर भी वे एक सहनशीलता व्यक्ति होने के कारण 58 के उम्र में जब लोग अपने घुटनों को टेक देते हैं तो दादा जी तो लगातार दस–दस घंटे काम करते थे। मुझे आज तक समझ नहीं आया कि यह किसके लिए इतना मेहनत करते हैं, जबकि इनके परिवार में दादी माँ के अलावा कोई दूसरा और है ही नहीं।

मैं मैग्जीन को पढ़कर बहुत उत्साह हुआ। शायद आजतक मैं किसी भी मैग्जीन को पढ़कर इतना उत्साहित कभी भी नहीं हुआ था। मेरा दिल उन्हें बार–बार ''थैंक्यू'' बोलने को उत्तेजित कर रहा था, क्योंकि उस हिन्दी मैग्जीन को पढ़कर मुझे तो ऐसा लग रहा था कि, मानों मैं अपने मित्रगण के साथ पूरी सौरमंडल सैर कर रहा हूँ और उनके लिए मंगल ग्रह पर थैंक्यू का हरा–भरा गार्डन बना रहा हूँ।

मित्रगण, मैं अपने साईकिल को कह कर बुलाया करता था, जो खटंजरी होने पर भी मेरे हर बड़े से बड़े समस्या में एक संकटमोचन का काम करती थी। मेरा मन पढ़कर खुशी से झूम उठा और मेरा दिल दादा जी को कई बार थैंक्यू बोलने के वाबजूद भी मैंने अपने आप को रोक नहीं पाया और एक बार चरण स्पर्श करते हुए थैंक्यू बोला।

''ओह! दादा जी आप सचमुच खुशियों का देवता हैं, जो हर पल हमारे खुशियों के बाग में माली बनकर पानी डालते रहते हैं, थैंक्यू दादा जी फिर से इतनी अच्छी मैग्जीन देने के लिए।''

उनकी आँखें नम सी हो गई, मैं समझ सकता था कि वह मेरे इस अनोखे जैसा प्यार को देखकर कैसा महसूस कर रहे थे? दादाजी अभी कुछ बोलते, तभी दादीमाँ टॉर्च बारते हुए दुकान पर आई।

मैं अभी दादीमाँ को चरणस्पर्श के लिए जैसे ही झुका तभी दादा जी बोल उठे ''वैसे बेटा तुम्हें अपनी दादी माँ को थैंक्यू बोलना चाहिए, जो तुम्हारी हर मनपसंद की किताबें और मैग्जीन को छुपा कर रखती है और यह मैग्जीन इन्होंने ही छुपा कर रखी थी, नहीं तो यह कब का न बिक चुकी होती।''

तभी मैंने कुर्सी के एक तरफ होते हुए बोला ''अरे! कैसे बिक जाती? जब मेरे पास इतनी अच्छी दादी माँ हैं।''

''हाँ, वो तो तुम्हारी दादी माँ हैं ही।'' दादा जी मुस्की मारे।

मैं उस मैग्जीन को लेकर अपने सुर में लगा हुआ था, लेकिन कभी–कभार बातचीत में सुर–ताल गड़बड़ा जाता, जिसके कारण मेरा सौरमंडल का सफर बीच रास्ते में ही छूट जाता।

''बस भी करे आप, मैं अपने बेटे की मन पसंद जानती नहीं क्या? तो कैसे नहीं रखती छुपा कर? आखिरकार तो मेरा एक ही बेटा है और आप उसके चीजों को बेचने में लगे हैं।'' दादी माँ मेरे माथे पर चूमते हुये बोली।

ऐसा प्यार शायद ही किसी अजनबी को मिलता है।'' मैंने सोचा।

''मुझे माफ कर दीजिए दुनिया की जगत जननी, आप सचमुच बहुत भोली हैं।'' दादा जी हाथ जोड़े।

''हे.... हे..... अरे! आप भी न क्या–क्या करते रहते हैं? अब तमाशा करना बंद कीजिए और चलिये खाना खा लिजिये. ...अंधेरा बढ़ती जा रही है और इस लाइन का भी कोई ठिकाना नहीं! कब कट जाये और शायद नन्दन को कहीं डेरा पर भी जाना हो!'' तभी मैंने मैग्जीन को बगल के दराज में रखा।

''अरे! दादी माँ जाना नहीं, जा रहे हैं अभी कोचिंग का होमवर्क भी पूरा करना है और हाँ, दादा जी, कल 9वीं का रिजल्ट घोषित हो रहा है स्कूल आकर निकलवा दीजियेगा, नहीं तो वह सर जी रिजल्ट दिखायेगा भी नहीं।'' मैंने खड़े होते हुए कहा।

पूरे शहर में केवल दादा जी ही एक ऐसे व्यक्ति थे, जो मेरे दिल को समझ सकते थे कि मैं क्या कहना और करना चाहता हूँ? इसलिए मैं कभी–कभार बिना झिझक किए, अपने जीवन का हर वह महत्वपूर्ण पल जो मुझे प्रेरणा देती थी कुछ अलग करने की, दादा जी से आकर शेयर करता था, क्योंकि वह मेरे बातों को सुनकर दूसरे की तरह खिल्ली नहीं उठाते, बल्कि एक दोस्त की तरह अलग सीख देते आगे बढ़ने के लिए।

''अरे! बेटा कल की बात कल सोचेंगे, आज क्यों अपना टाइम खराब करे? चलो पहले खाना खा लो, उसके बाद डेरा पर जाना।'' अचानक से खड़े हो गए।

''लेकिन दादा जी.....!'' अभी बोल ही रहा था तभी दादा जी, दादी माँ के साथ दुकान से बाहर निकल गए।

''अरे! बेटा फिर तुम लेकिन, परंतु, किंतु बोलने लगे, अब सब दिमाग का ऐप्लिकेशन खोलना बंद करो और चुपचाप चलो।'' शटर गिराते हुए बोले।

उनका डेरा, दुकान से लगभग दस कदम की दूरी पर था, लेकिन वहाँ पर पहुँचने के लिए कई मुहल्लों को घूमकर जाना पड़ता था, जिसके चारों तरफ लम्बी–लम्बी सी इट की घरें बनी हुई थी और सड़कें तो मानो कोई स्वर्ग का रास्ता, जो रात्रि में हमेशा किनारे लगे ट्यूबलाइट की रोशनी में सोने–चाँदी की तरह चमचमाती हुई प्रतीत होता था। वहाँ मैं अपनी बनाई हुई शॉर्टकट रास्ते से ही जाता था, लेकिन आज ऐसा लग रहा है कि फिर से उस जलेबी जैसी घुमाऊँ दार रास्ते से होकर जाना पड़ेगा, जहाँ रात्रि के आठ बजने के बाद एक कुत्ते भी नहीं दिखतें मैंने हार–पाछ कर हामी भर दी।

''ठीक है चलिये, लेकिन मैं अपने बनाई हुई रास्ते से आ रहा हूँ।''

तभी दादा जी गुस्से से लाल हो गए, लेकिन धीमी आवाज में समझाये ''देखो बेटा शॉर्टकट कभी भी भारी पड़ सकता है, इसलिए चुपचाप हम लोग के साथ चलो।'' मैं उनकी बातों को काट नहीं सकता, इसलिए चुपचाप जाने लगा।

मैं अभी 9वीं का छात्र था, और दसवीं का छात्र बनने के लिए मुझे एक और दिन अपने किये गए कारनामों रिजल्ट का इंतजार करना था। मेरा 9वीं का सेशन समाप्त होने ही वाला था और तत्काल मुझे इस शहर में रहते हुए चार साल हो चुके थें मैं हर रोज कोशिश करता यहाँ पर आने की ताकि उनके गमों को खुशियों के फूलों से भर सकूँ उन्होंने मुझे हमेशा प्यार दिया और एक दोस्त की तरह प्रेरणा, जिसके लिए मैं उनका तहे दिल से आभारी हूँ।

मैंने अपना चप्पल घर के बाहर निकाल कर अभी हाथ साफ करने में लगा था तभी दादा जी बोले। ''आज बेटा हम लोग नीचे दरी पर बैठकर भोजन करेंगे।''

''क्यों जी ये टेबल किस लिए हैं? जो आप मेरे बेटे को नीचे बैठा रहे हैं।'' दादी माँ भड़की।

''मैं समझ गया कि जब तक मैं नहीं बोलूँगा तब तक दादी माँ फटफटिया गाड़ी की तरह बड़–बड़ दादा जी को बोलती ही जाती।

''अरे! दादी माँ रहने दीजिए न! आज थोड़ा अपने धरती माता के साथ बैठने दीजिए।'' मैंने सिर पर हाथ फेरा।

''अरे! मेरा लाल जा बैठ जा, मैं अभी खाना लेकर आती हूँ।'' दादी माँ एक दम से अपना पारा नीचे कर ली।

तभी दादाजी भौहों को ऊपर–नीचे करते हुए बोले ''अरे! बेटा तुम कौन सा जादू करते हो कि तुम्हारी दादी माँ का पारा झट से उतर जाता है?''

''अरे! दादा जी अपना–अपना स्टाइल है, आपको समझ में नहीं आयेगा, आप भोजन कीजिए।'' मैंने उनका खिल्ली उड़ा दिया।

भोजन बहुत ही स्वादिष्ट था आहा! कितना माजा आ रहा है, मन कर रहा है कि पूरा समाप्त कर दूँ लेकिन नहीं! नही! किसी ने कहा था कि मन की बातों पर ध्यान मत देना, क्योंकि यह ज्यादातर मजे को ही चुनता है और हद से ज्यादा मजा हमारी चलती हुई जिंदगी को तहस–नहस कर सकता है। सेहत और जिंदगी मजे से नहीं बल्कि कष्ट उठाने से बनती है।

भोजन अच्छा लग रहा है खूब जमकर खाओ, नींद भी आ रही है, जी भर कर रिकॉर्ड बनाओ। अभी तो समझ से परे है जब दौड़ेगा बिन पैजामा के तब कहेगा।

''काश! कुछ कम मजा किया होता तो आज यह नौबत नहीं देखनी पड़ती।''

अचानक से मैंने बिना कुछ कहे जाने की आज्ञा माँगी, तभी दादी माँ किचन से दौड़ते हुए आई ''वैसे बेटा तुम अपने डेरा पर जाओगे कैसे? मेरा मतलब है तुम्हारा साईकिल कहाँ पर है?''

मैं आश्चर्य में पड़ गया। ''ओह! दादी माँ साईकिल तो दुकान पर ही छूट गया है, लेकिन आपको चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है, मैं इधर से जाकर ले लूँगा'' – मैंने कहा।

''अरे! रूको बेटा, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।'' दादा जी खड़े होते हुए बोले।

''अरे! नहीं रहने दीजिए, मैं जाकर ले लूँगा और वैसे भी वह एक खटंजरी साईकिल है, उसे कोई चाहकर भी नहीं देखता और हाँ दादी माँ आज का आपका खाना बहुत ही अच्छा और स्वादिष्ट था।''

मैं कहकर जाने लगा तभी दादी माँ चिल्लाई ''अच्छा ठीक से जाना और कल आना जरूर।''

तभी मैंने पीछे मुड़ते हुए ''ठीक है दादी माँ कोशिश करूँगा।'' कहकर उस अंधेरी रात में उस सुनसान रास्ते पर टहलते हुए जा रहा था।

रात के अभी नव बजे होंगे, लेकिन कुछ भी कहो रात में घुमने का मजा ही कुछ और होता है। न टैफिक जाम और न ही कहीं लोगों को इंतजार करने के लिए अत्यधिक भीड़, और जहाँ तारों की टिमटिमाती हुई ये रोशनी, जिसमें ओस की बूंदों की तरह दिल को ठंडक पहुँचाने वाली हल्की–हल्की सी हवाएँ मन को मोह रही थी। इसमें काश! मेरे मित्रगण होते तो मिलकर इस सुनहरी मौसम का लुत्फ उठाते। ना जाने उन्हें कोई ले गया कि छोड़ा भी है। एक तो पहले से ही खटंजरी है और ऊपर से जब लोग उन्हें चलाते हैं तो गुस्से से उठाकर फेंक देते हैं ओह! हो! कितना दर्द होता होगा न, लेकिन वह तो लोहे के न बने हैं, तो क्या हुआ? आजकल तो कुछ भी संभव है, जब लोग बड़े से बड़े जानवर को एक चुटकी में काबू कर लेते हैं तो ये किस खेत के मुली है? इसी तरह बकबक करते जा रहा था।

तभी अचानक जोर से पेशाब लग गया अबे! इह कमबख्त कभी भी लग जाता है अब किधर जाऊँ, चारों तरफ तो बल्ब उजाला किया हुआ है अगर किसी ने देख लिया तब तो मेरा आन, बान और शान तीनों पानी में चला जाएगा। तभी एक गली दिखा जो दो घरों के दिवारों के बीच में था। मैं वहाँ पर पहुँचा और इधर–उधर

THREE FRIENDS IN A SCHOOL

STRUGGLE FOR AN EDUCATION

यह पुस्तक मानव समाज के उन गरीब परिवारों के बच्चों जो कि प्रतिभावान होने के बावजूद भी वे अपने सपनों को पंख नहीं लगा पाते और उसका जो प्रमुख कारण होता वह उनकी गरीबी होती है जो चाहकर अपने बेटे–बेटी को पैसा न हाने के कारण बड़े स्कूल में पढ़ा नहीं पाते।

यहाँ इस पुस्तक में भी तीन दोस्तों में से एक दोस्त पढ़ने–लिखने में बहुत तेज–तराक होता है और अपने हुनर से पूरे स्कूल में ऐसे छा जाता है कि स्कूल के सभी बच्चे आगे चलकर आई.ए.एस. या आई.पीएस. बनना छोड़ केवल उसके जैसा बनना चाहते हैं। लेकिन वह आगे अपने बोर्ड की परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए स्कूल का फीस चुका नहीं पाता है और अंततः भगवान को प्यारा हो जाता है। और उसके दो दोस्त भी अपने–अपने फिल्ड में कुछ नाम कमाते हैं।

इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य यह है कि इस आधुनिक युग में छोटे छात्रों से जुड़ी अपने पढ़ाई और एक गलत सोच फैले जात–पात और बहन–बेटियों के शादी के लिए दहजे प्रथा और छात्रों को आत्महत्या करने की कोशिश को एक सही सोच देकर सुधारने की है।

लेखक के बारे में

मैं विशाल कुमार वीर, बिहार राज्य के मझौलिया प्रखंड के चौलामार नामक गाँव का रहने वाला हूँ। मेरे पिताजी, श्री शिव शम्भू ठाकुर एक मध्यवर्गीय किसान हैं तो मेरी माताजी श्रीमती ज्ञानती देवी एक गृहणी है। मैं अपने तीन भाइयों में ज्येष्ठ हूँ। मेरे दो छोटे बन्धुजन रोहित कुमार और रवि किशन कुमार है, जो अभी मेरे गाँव में एक निजी विद्यालय में अध्ययनरत है। मेरी प्रारंभिक शिक्षा मोहदिपूर पंचायत, जो मेरे गाँव से ठीक एक कि.मी. की दूरी पर स्थित है, वहाँ के एक सरकारी स्कूल, राजकीय मध्य विद्यालय में पूरी हुई। जून 2011 से मेरी शिक्षा मोतिहारी के एक प्राइवेट स्कूल, एम.एस. मेमोरियल पब्लिक स्कूल में चल रही है। यहाँ मैंने षष्ठी वर्ग में नामांकन प्राप्त किया था, तथा तत्काल मैं इसी साल दसवीं बोर्ड की परीक्षा दिया है।

मेरे माता–पिता तथा छोटे भाइयों के द्वारा मुझे मिलने वाला सहयोग अमल्यवान है, जिसे मैं अपने जीवन भर कभी नहीं भूला सकता।

वर्तमान समय में मैं रघुनाथपूर गाँव, जो मोतिहारी शहर के नजदीक है, अपने मामाजी विकास कुमार के पिता श्री हरदेव ठाकुर तथा माता श्रीमती मीना देवी, जो मरे नाना–नानी हैं, के साथ रहता हूँ। जिनकी सहायता और सहारे ने ही मुझे इस काबिल बना सका, जिसके लिए मैं उन सभी का तहे दिल से शुक्रियादा करना चाहता हूँ।

इस पुस्तक को एक अलग मोड़ देने में मेरे दो दोस्त मासूम राज मगंलम और प्रशांत कुमार पांडेय ने बहुत सहायता की।

मेरी यह पहली लिखी हुई पुस्तक हैं, जो एक काल्पनिक कहानी है और तीन दोस्तों के साथ एक बूढे दादा–दादी से जुड़े अपने गरीबी और मीडिल क्लास के फैमली के उन सभी टैलेंटेड लड़कों को दर्शाता है।

लेखक से सम्पर्क हेतु:
vishalkumarveer18@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-81-19927-75-3
9 788119 927753